गुरू ब्रह्मा गुरू विष्णु, गुरु देवो महेश्वरा गुरु साक्षात परब्रह्म, तस्मै श्री गुरुवे नमः

एनईपी 2020 के परिप्रेक्ष्य में शिक्षक

शिक्षकों के लिए राष्ट्रीय ऑनलाइन लाइव सत्र

प्रो. शरद सिन्हा

प्रोफेसर एवं अध्यक्ष, अध्यापक शिक्षा विभाग,
एन.सी.ई.आर.टी.,
नई दिल्ली

1. **१. शिक्षकों का अप्रतिम योगदान —** देश के सुदूर क्षेत्रों (पूर्वोत्तर, लद्दाख, बिहार आदि) में विषम परिस्थितियों में शिक्षकों की प्रतिबद्धता को नमन करना।

2. **२. नीति की अपेक्षाएँ (एन.ई.पी. 2020) —** राष्ट्रीय शिक्षा नीति के अध्याय ५ के तहत 'प्रेरित, ऊर्जावान और सक्षम शिक्षक' के केंद्रीय दृष्टिकोण को समझना।

3. **३. व्यावहारिक समाधान व क्रियान्वयन —** सीमित संसाधनों में स्तरानुसार शिक्षण (TALA), बहुस्तरीय समूह और शून्य-बजट स्थानीयकरण को कक्षा में उतारना।

4. **४. भारतीय ज्ञान परंपरा से अपार संभावना —** तैत्तिरीय उपनिषद के 'पंचकोश मॉडल' और गीता के 'आचरण मॉडल' के माध्यम से शिक्षक की दिव्य क्षमता की खोज।

5. **५. संकल्प और संदेश —** सच्ची विद्या (सा विद्या या विमुक्तये) के प्रकाश में बच्चों को परिस्थितियों की सीमाओं से मुक्त करने का दृढ़ संकल्प।

प्रो. शरद सिन्हा

भारतीय शिक्षकों का अप्रतिम योगदान और समर्पण

विपरीत और विषम परिस्थितियों में देश के लाखों शिक्षक राष्ट्र निर्माण की रोज़मर्रा की कहानियाँ लिख रहे हैं:

- **पूर्वोत्तर के दुर्गम पहाड़:** सड़कें न होने पर भी हर सुबह घंटों पैदल चलकर विद्यालय पहुँचना।

- **लद्दाख की बर्फीली घाटियाँ:** सर्दियों के छोटे शैक्षणिक सत्र में भी एकल शिक्षक द्वारा ५ कक्षाओं को एक साथ बुनियादी शिक्षा देना।

- **बिहार-झारखंड के बाढ़ प्रभावित क्षेत्र:** विद्यालय डूबने पर सुरक्षित स्थानों व गृह-संपर्क द्वारा निरंतर शिक्षा बनाए रखना।

- **आदिवासी क्षेत्र (ओडिशा/झारखंड):** स्वयं स्थानीय भाषा न जानने पर भी बच्चों की मदद से सीखकर 'भाषा का सेतु' बनाना।

- **राष्ट्र निर्माण की सच्ची नींव:** मध्याह्न भोजन, स्वयं के व्यय से बच्चों को कॉपियां दिलाना, और बाल विवाह से बच्चियों को बचाना।

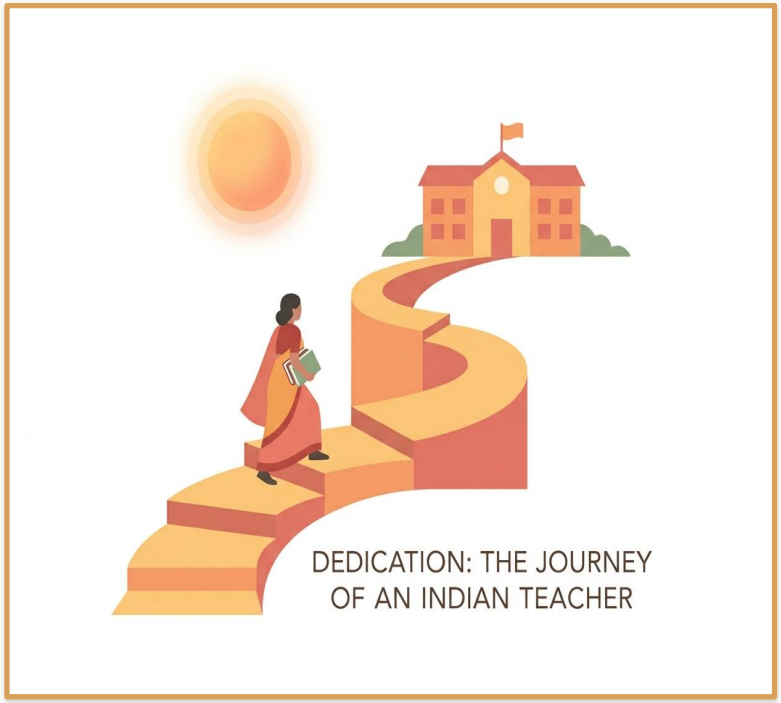

[चित्र: दुर्गम रास्तों पर कर्तव्य पथ पर अग्रसर शिक्षक]

प्रो. शरद सिन्हा

एन.ई.पी. 2020 का केंद्रीय दृष्टिकोण - सक्षम व समर्थित शिक्षक

- **अध्याय ५ का केंद्रीय संकल्प:** नीति के अध्याय ५ का शीर्षक ही 'प्रेरित, ऊर्जावान और सक्षम शिक्षक' है, जो शिक्षक को शिक्षा व्यवस्था की धुरी मानता है।

- **शिक्षक ही नियंता:** नीति स्पष्ट करती है कि पाठ्यक्रम या परीक्षाएँ नहीं, बल्कि बच्चा किसके सामने खड़ा है—यानी शिक्षक ही राष्ट्र का भविष्य गढ़ता है।

- **शिक्षा सुधार की सफलता का आधार:** सुधारों की सार्थकता इस बात पर निर्भर है कि शिक्षक कितना सक्षम, सम्मानित और समर्थित महसूस करता है।

- **भूमिका की पुनर्कल्पना:** शिक्षक को केवल पाठ्यक्रम प्रदाता नहीं बल्कि समाज का मार्गदर्शक, नैतिक स्तंभ और निरंतर मार्गदर्शक माना गया है।

आचार्यदेवो भव।
मातृदेवो भव। पितृदेवो भव॥

— तैत्तिरीय उपनिषद (शिक्षावल्ली)

आचार्य (शिक्षक) को अपने लिए देवता स्वरूप मानो। ध्यान दें, इस पवित्र क्रम में शिक्षक को माता-पिता से भी पहले रखा गया है क्योंकि माता-पिता जीवन देते हैं परंतु शिक्षक उस जीवन को सार्थक व गरिमामय जीने के अमूल्य साधन प्रदान करता है।

प्रो. शरद सिन्हा

शिक्षक के ९ बहुआयामी रूप (कक्षा अभ्यास)

१. बुनियादी साक्षरता का आधार

2025 तक प्राथमिक कक्षा में सार्वभौमिक बुनियादी साक्षरता और संख्या ज्ञान (FLN - निपुण भारत) हासिल करना। नींव मज़बूत होगी तो आगामी विकास संभव होगा।

२. बहुभाषिक व स्थानीय शिक्षाशास्त्री

कक्षा ५ (और अधिमानतः ८) तक मातृभाषा या स्थानीय भाषा में अध्यापन। बच्चे की गृह-भाषा और अकादमिक भाषा के बीच स्नेहपूर्ण सेतु बनना।

३. पाठ्यक्रम का प्रासंगिकीकरण

रटने की आदत की जगह क्षमता आधारित और अनुभवजन्य शिक्षा (Experiential Learning) पर बल। स्थानीय उदाहरणों और सामग्री के आधार पर पाठ रचना।

४. विकास का वास्तविक आकलनकर्ता

स्मरण शक्ति की वार्षिक रटी परीक्षा की जगह निरंतर रचनात्मक मूल्यांकन (Formative Evaluation)। 'समग्र प्रगति पत्र' (Holistic Progress Card) का व्यावहारिक क्रियान्वयन।

प्रो. शरद सिन्हा

शिक्षक के ९ बहुआयामी रूप (नेतृत्व व निरंतरता)

५. भारतीय ज्ञान परंपरा संरक्षक

प्राचीन ज्ञान विरासत को वैज्ञानिक ढंग से जोड़ना ताकि बालक अपनी संस्कृति के समृद्ध वैज्ञानिक आधारों को पहचान सके।

६. नैतिक मूल्यों का आदर्श

ईमानदारी, संवैधानिक मूल्य और वैज्ञानिक दृष्टिकोण का पाठ आचरण द्वारा देना। शिक्षक ही छात्रों का आदर्श होता है।

७. समावेशी शिक्षक

हाशिए पर खड़े, विशेष आवश्यकता वाले तथा सामाजिक-आर्थिक रूप से वंचित बच्चों को स्नेह से गले लगाना ताकि कोई बच्चा पीछे न छूटे।

८. मानव-केंद्रित प्रौद्योगिकी प्रदाता

दीक्षा, पीएम ई-विद्या का उपयोग करना परंतु स्क्रीन को शिक्षक का विकल्प नहीं बल्कि पूरक बनाना (स्नेह व ध्यान शिक्षक ही दे सकता है)।

९. निरंतर विद्यार्थी (CPD)

अपनी प्रासंगिकता बनाए रखने के लिए प्रतिवर्ष कम से कम ५० घंटे का अनिवार्य सतत व्यावसायिक विकास (CPD) प्रशिक्षण लेना।

प्रो. शरद सिन्हा

हर परिस्थिति और कम संसाधनों में आगे बढ़ने के ३ व्यावहारिक तरीके

१. बच्चा जहाँ है, वहीं से शुरू करें

• रजिस्टर में दर्ज कक्षा ३ का बच्चा यदि १ के स्तर पर है, तो वहीं से शिक्षण दें।

• नियमित छोटी मौखिक गतिविधियों (पठन जाँच, गणित अभ्यास) से वास्तविक स्तर पहचानें।

• 'टीचिंग एट द राइट लेवल' (TALA) अपनाएँ।

२. बहुस्तरीय कक्षा प्रबंधन

• कक्षा के बच्चों को उम्र की जगह पठन और गणित योग्यता के आधार पर समूहों में बाँटें।

• जब शिक्षक एक समूह को सीधे पढ़ाए, तब अन्य स्वतंत्र गतिविधि में लगे रहें ।

• बड़े छात्रों को सहपाठी शिक्षक (Peer Tutoring) बनाएँ।

३. बिना किसी बजट के स्थानीयकरण

• विद्यालय के आँगन को मापन की कक्षा और गेट के पास के तालाब/बगीचे को पारिस्थितिकी की प्रयोगशाला बनाएँ।

• स्थानीय बाज़ार की मदद से गणित समस्याएँ हल कराएँ।

• विचारों का रूप परिवेश में खोजें।

प्रो. शरद सिन्हा

व्यावहारिक क्रियान्वयन : भाषा सेतु, सहज मूल्यांकन व सहकर्मी विकास

भाषा का सुदृढ़ सेतु

• नए अकादमिक विषय को सीधे कठिन मानक भाषा में पढ़ाने के बजाय, पहले बालक की घरेलू व स्थानीय भाषा में मौखिक रूप से विस्तार से समझाएँ।

• बच्चों की ही मदद से द्विभाषिक शब्दावली (स्थानीय से मानक भाषा शब्दकोश) की सूची दीवार पर तैयार करें।

तनावमुक्त और सहज मूल्यांकन

• किसी बाहरी परीक्षा के अतिरिक्त दबाव के बिना, नियमित शिक्षण गतिविधियों के दौरान अवलोकन (Observation) करें।

• हर बच्चे के लिए एक छोटा 'अवलोकन रजिस्टर' तैयार करें, जो भारी-भरकम साधनों के बिना समग्र प्रगति पत्र की सटीक रूपरेखा देगा।

सहकर्मी व्यावसायिक विकास

• बाहरी बड़े प्रशिक्षण कार्यक्रमों की प्रतीक्षा किए बिना, अपने विद्यालय के सहकर्मियों के साथ मिलकर साप्ताहिक रूप से अनौपचारिक परिचर्चा करें।

• चर्चा करें कि किस कक्षा में कौन सी शिक्षण गतिविधि काम आई और किसमें सुधार की आवश्यकता है।

प्रो. शरद सिन्हा

भारतीय ज्ञान परंपरा और शिक्षक का सर्वश्रेष्ठ आचरण

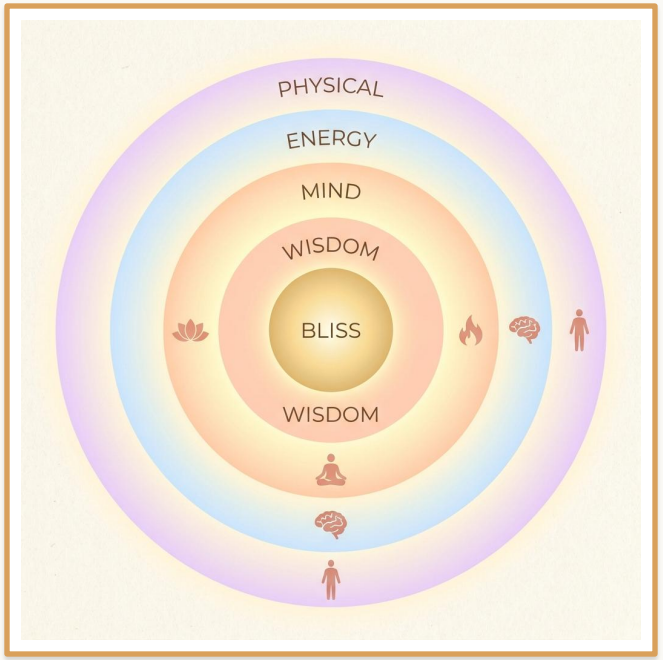

[चित्र: समग्र विकास का शाश्वत पंचकोश मॉडल]

पंचकोश मॉडल (तैत्तिरीय उपनिषद) — समग्र विकास का आधार:

- **१. अन्नमय कोश:** शारीरिक विकास और पोषण का स्तर (योग, आसन, शिल्प कला)।
- **२. प्राणमय कोश:** प्राण शक्ति और मानसिक दृढ़ता (प्राणायाम, जीवन शक्ति का स्तर)।
- **३. मनोमय कोश:** भावनाओं का स्तर (अध्ययन, रचनात्मक चिंतन, मानसिक शांति)।
- **४. विज्ञानमय कोश:** बुद्धि, विवेक और आलोचनात्मक चिंतन (गणित, विज्ञान, व्यावहारिक बुद्धि)।
- **५. आनंदमय कोश:** आत्मीय सुख, संतुष्टि और आनंद का स्तर (नैतिकता, मूल्य व सेवा भाव)।

यद्यदाचरति श्रेष्ठस्तत्तदेवेतरो जनः। स यत्प्रमाणं कुरुते लोकस्तदनुवर्तते॥

शिक्षक का श्रेष्ठ आचरण ही सबसे बड़ा 'जीवंत पाठ्यक्रम' है जिसे छात्र प्रतिदिन देखता और सीखता है।

प्रो. शरद सिन्हा

हमारा पावन संकल्प

सा विद्या या विमुक्तये।

— विष्णु पुराण

वही सच्ची शिक्षा है जो अज्ञानता से मुक्ति करे, हीनता से उबारे, बच्चे को उसकी विपरीत परिस्थितियों, गरीबी, भौगोलिक सीमाओं और भाषा की बेड़ियों से मुक्त करके एक स्वतंत्र, संवेदनशील व समद्रष्टि नागारिक के रूप में राष्ट्र को समर्पित करे।

एक पावन प्रार्थना और संकल्प

- अपने काम और भूमिका को कभी भी संकुचित या छोटा मत समझिए।
- जिस दिन आपने किसी बच्चे को पहली बार अक्षर या अंक ज्ञान सिखया, जब किसी वंचित बालिका को वापस स्कूल ले आए, उस क्षण आपने देश के स्वर्णिम भविष्य की ठोस आधारशिला रखी है।
- एन.ई.पी. 2020 आपकी इसी अमूल्य भूमिका को पहचानकर आपको नया संबल और सम्मान प्रदान करती है।

धन्यवाद एवं हार्दिक शुभकामनाएँ!

प्रो. शरद सिन्हा